AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

राष्ट्रीय आन्दोलन में नारी की विशेष भूमिका

पवन कुमारी
शोध छात्रा
इतिहास विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ0 नीलम शर्मा
इतिहास विभाग
सहायक आचार्य कला संकाय
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

परिचयात्मक शोध का परिचय

प्राचीन काल (वैदिक काल) में स्त्रियों की दशा

अति प्राचीन काल में भारतीय समाज में स्त्रियों का सम्मान व आदर आदर्शात्मक व मर्यादायुक्त रहा है। उन्हें आदर व श्रद्धा का स्थान मिला है। स्त्री पुरूष में कोई भेद रहा था। दोनों की सामाजिक परिस्थिति समान थी। लड़कियां ब्रह्मचर्य का पालन करती थी। आश्रम में शिक्षा प्राप्त करती थी। सह शिक्षा का प्रचलन था।

वैदिक काल में स्त्रियां, बुद्धि व शिक्षा में अग्रणी थी व यजुर्वेद के अनुसार इसकाल में कन्या का उपनयन संस्कार होता था। उसे सन्ध्या करने का अधिकार था। वे तर्क शास्त्र व वाद विवादों में पारंगत थी। इस काल में सुलभा, गार्गी, मैत्रयी आदि के नाम अविस्मरणीय है। रोमशा उर्वशी, विश्ववारा, घोशा, लोपामुद्रा, अपाला इत्यादि कवयित्रियां भी काफी लोकप्रिय थी।

लड़कियों का विवाह युवावस्था में होता था, वे अपवना जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र थी। स्त्रियां चाहती तो अपना जीवन बिना विवाह के भी व्यतीत कर सकती थी। उस काल में नारी को कन्या के रूप में सम्पति का अधिकार मान्य था।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

कुवलयमाला में उसे गृहलक्ष्मी कहा गया है। पत्नी को सम्पति की देवी कहा जाता था। विधवा को सम्पति का अधिकार नहीं था। पत्नी का अपने परिवार में सम्मान था। महाभारत में भीष्म के अनुसार ''वह घर घर नहीं अगर उस घर में पत्नी नहीं। नव वधू तू जिस घर में जा रही हो वहाँ की तु साम्राज्ञी है तेरे श्वसुर, सास, देवर व अन्य व्यक्ति तूझे साम्राज्ञी समझते है, वे तेरे शासन में आनन्दित हो'' (अथर्ववेद)।

प्राचीन युग में भारत की स्त्रियों को शिक्षा व यज्ञ करने का अधिकार प्राप्त था। प्रत्येक सामाजिक व धार्मिक कार्य में स्त्रियों की उपस्थिति अनिवार्य थी। उस समय नियोग प्रथा बहुप्रचलित थी। स्त्री सन्तान उत्पन न होने पर या अच्छी सन्तान के लिए नियोग कर सन्तान प्राप्त कर सकती थी। विधवा को पुनः विवाह करने का अधिकार था वह अपने देवर या अन्य व्यक्ति से इच्छानुसार विवाह कर सकती थी। धर्म, अर्थ, कर्म के कार्य पर धन खर्च करने के लिये उसे पति या पुरूष संबंधी की आज्ञा लेनी पड़ती थी। कन्या को पुत्र से, परन्तु दत्तक पुत्र से श्रेष्ठ माना जाता था। वीर व श्रेष्ठ पुत्र की विधवा मां को भी आदरपूर्वक देखा जाता था। पर्दा प्रथा का नामोनिशान नहीं था। स्त्रियों को उपहार में संपत्ति प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। एक विवाही समाज का मुख्यतः प्रचलन था।

स्त्री को 'जाया' कहा गया है, जिसका अर्थ है स्त्री अपने पति को दूसरा जन्म देती है। (ऐतेरय ब्राह्मण)' ''कोष्तव्यस्वम् स्वस्त्रियज्ञ'' करती थी (वाल्मीकि) तथा सीता भी 'सन्ध्या' करती थी। पुरूष स्त्रियों की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझते थे। एक पत्नी रखने का आदर्श था। इस काल में स्त्रियों को सामाजिक धार्मिक व राजनीतिक आदि क्षेत्रों में पुरूषों के समान अधिकार थे।

परिचयात्मक शोध का उद्देश्य

19वीं शताब्दी के दूसरे भाग में स्त्रियों में राजनैतिक जागरूकता आने लगी। डा. रोमिला थॉपर के अनुसार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन भारतीय स्त्रियों में बदलाव का मुख्य श्रोत था। स्त्रियों में राजनैतिक जागरूकता 1857 से प्रारम्भ हुई और 1885 में क्रांगेस की स्थापना से यह जन–जन तक पहुँची। प्रारम्भ में राष्ट्रीय

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

आन्दोलन का उद्देश्य समाज सुधार था, परन्तु धीरे–धीरे यह एक राजनीतिक आन्दोलन बन गया।

गांधीजी ने भी स्त्रियों को राजनीति में सक्रिय करने के अनेक प्रयास किये। डा. एनी बैसेण्ट व श्रीमति सरोजनी रायडू को क्रांगेस अध्यक्ष बनाया गया। यह राजनीतिक जागरूकता का प्रतीक था।

इस प्रकार स्त्रियों राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक हुई और उनकी स्थिति में सुधार हुआ। मध्यम व उच्च वर्ग की स्त्रियों का नौकरी के प्रति रूझान उनकी आर्थिक स्वतंत्रता में सहायक हुआ। परिणामतः स्त्रियों में एक प्रबुद्ध वर्ग का उदय हुआ। इससे पूर्व भी रानी लक्ष्मीबाई एवं बेगम हजरत महल ने 1857 की क्रान्ति में सक्रिय भूमिका निभाई।

अतः सामाजिक और धार्मिक सुधारकों के साथ ही महिलाओं के नवोदित प्रबुद्ध वर्ग ने भी भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भाग अदा किया। स्त्रियों की पारम्परिक छवि को तोड़कर आने वाली पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करने का श्रेय इन प्रबद्ध मध्यमवर्गीय महिलाओं को जाता है।

प्रस्तावित शोध का महत्व

हिन्दू धर्म में ब्राह्मणवाद ने स्त्रियों को एक प्रकार से योजनाबद्ध तरीकों से शोषण की स्थिति में पहुँचा दिया। धर्मशास्त्र काल में पराशर संहिता, विष्णु संहिता, याज्ञवल्वय संहिता, मनुस्मृति लिखी गई। उनमें स्त्री शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध लगाये तथा बाल विवाह को धार्मिक संस्कार बताया गया है। सती को आदर्श कृत तथा स्त्री को उपभोग की वस्तु बताया गया। मोक्ष व स्वर्ग प्राप्त करने का साधन पति सेवा बताया गया। अनपढ़ व अन्धविश्वासी स्त्रियों ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान कर अपनी स्थिति शोचनीय बना ली।

ये व्यवस्था प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से स्त्रियों की परिस्थिति को गिराने के लिये सहायक सिद्ध हुई। निम्न प्रतिबद्ध तरीकों तथा व्यवस्थाओं द्वारा स्त्रियों को

ISSN:2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

संयुक्त परिवार में दबा कर रखा गया। वे इस व्यवस्था का विरोध न कर सके, इसके लिए उसे शिक्षा से वंचित रखा गया। इस प्रकार संयुक्त परिवार स्त्री जाति के ह्रास व शोषण का मुख्य कारण बना।

प्रस्तावित शोध के सोपान

आधुनिक समाज में स्त्रियों की राजनैतिक जागरूकता एवं सामाजिक उत्थान के मुख्य कारण निम्न रहे–

1. सुधारकों ने स्त्रियों में पुरूषों के बराबर खड़ा होने का विश्वास पैदा किया।
2. समाज सुधारकों ने इस दिशा मे कई महत्वपूर्ण कार्य किये।
3. समाज सुधारकों द्वारा किये गये शिक्षा के प्रसार का स्त्रियों पर काफी प्रभाव पड़ा। उन्होंने शिक्षित होने और पश्चिमी समाज की स्त्रियों के बेहतर स्थिति का अध्ययन किया और पश्चिम का स्वतंत्रता का इतिहास उनमें काफी लोकप्रिय हो गया।
4. स्त्रियों में बढ़ती शिक्षा ने पुरूषों को उनकी सामाजिक भूमिका के बारे में पुनर्विवाह करने पर बाध्य किया और उन्हें चार दीवारी से निकलने का अवसर मिला।
5. अनेक सामाजिक संस्थाओं ने संगठित होकर स्त्रियों की स्वतंत्रता एवं सामाजिक स्तर में सुधार के लिये कार्य किया। राजपूत राज्यों में इस संबंध में गंभीरता पूर्वक विचार होने लगा। परिणामतः स्त्रियों के उत्थान के लिये ''राजपूत हितकारिणी सभा'' की स्थापना हुई।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रघुवीर सिंह : पूर्व आधुनिक राजस्थान, उदयपुर 1951 ई.
2. राणावत, मनोहर सिंह : 16 वीं शदी का राजस्थान, अजमेर, 1977 ई.
3. राम, पेमा, डा. : मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक आंदोलन, जयपुर 1977 ई.
4. रेऊ, बी.एन. : मारवाड़ का इतिहास, भाग 1–2, जोधपुर, 1940 ई.
5. शर्मा, एम. एल. : राजस्थानी भाषा और साहित्य, इलाहाबाद, वि.स. 2006 ई.

ISSN: 2320-3714
Volume:1 Issue:3
March 2021
Impact Factor:6.3
Subject:Humanities

6. सिंह, करणी, डा. : बीकानेर के राजघराने से केन्द्रीय सत्ता से संबंध (1465–1949) बीकानेर 1968 ई.

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism / Guide Name / Educational Qualification / Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

पवन कुमारी
डॉ0 नीलम शर्मा